दैनिक भास्कर
भारत का सबसे तेज बढ़ता अखबार



# किडनी की सभी बीमारियों का इलाज है होम्योपैथी में

किडनी बीमारियों पर एक सेमिनार का आयोजन हुआ।

**अम्बाला.** होम्योपैथी में किडनी की सभी बीमारियों के इलाज संभव है। यह दावा है डा. सुरेंद्र मोहन का। उन्होंने स्थानीय होटल में किडनी बीमारियों पर एक सेमिनार का आयोजन किया। सेमिनार में डा. सुरेंद्र ने कहा कि डायलसिस वाले मरीजों को भी होम्योपैथी से आराम मिला है और ऐसे मरीजों से पहली ही खुराक के साथ डायलसिस को छोड़ दिया। सेमिनार में उन्होंने किडनी के कुछ मरीजों को भी आमंत्रित किया था। इन मरीजों का होम्योपैथी से इलाज किया गया। अब उनकी बीमारी काफी हद तक कंट्रोल में है। डा. सुरेंद्र ने बताया कि गुर्दे का रोग एक मल्टीसिस्टम गड़बड़ी है।

इसमें खून की कमी, ब्लड प्रेशर, हार्ट बीट बढ़ना समेत अनेक बीमारियां आ जाती है। डा. ने बताया कि किडनी की बीमारियां बहुत हद तक मनोस्थिति पर निर्भर करती है। लगातार शोध से पता चला है कि किडनी के मरीज उदास, हतोत्साहित, चिंतित, उत्तेजक व डर भीतर तक बैठा होता है। इससे शरीर की प्रणाली डिस्टर्ब हो जाती है। इसका परिणाम विभिन्न बीमारियों

छावनी के बतरा पैलेस में पत्रकारों से किडनी के इलाज के बारे में बातचीत करते होम्योपैथिक डाक्टर सुरेंद्र मोहन। -भास्कर

के तौर पर सामने आता है। ऐसे में होलिस्टिक होना जरूरी है। इसमें होम्यो डायनामाइट गोलियां आरोग्यकर प्रतिक्रिया शरीर में शुरू करती है। जिससे रोगी का मन स्वस्थ होता है। इससे किडनी में नई कोशिकाएं बन जाती है। जिससे गुर्दे दोबारा से सुचारू रूप से काम करना शुरू कर देते है। उन्होंने बताया कि होम्योपैथी मरीज में सकारात्मक शक्ति का संचार करती है। इस अवसर पर उनके साथ लेडी डा. सरोज मोहन व डा. दिनेश मोहन भी उपस्थित थे।

PUNJAB KESARI, Ambala

पंजाब केसरी

पंजाब केसरी
शनिवार, 22 सितम्बर 2007

# रोगों का किया सफल इलाज

छावनी के एक रेस्तरां में डा. सुरिन्द्र मोहन होम्योपैथिक किडनी फेल का सफल इलाज संभव के विषय में पत्रकारों को बताते हुए। .... अग्रवाल

अम्बाला छावनी, 21 सितम्बर (ब्यूरो) : गुर्दे के रोगों से पीड़ित कई रोगों का होम्योपैथिक पद्धति से सफल उपचार कर कई रोगियों का डायलिसिस कराने का अम्बाला शहर के मोहन होम्यो के डा. दिनेश मोहन ने दावा किया है कि उनका कहना था कि आज से 13 वर्ष पूर्व उनकी माता का निधन गर्दे फेल होने के कारण ही हुआ था। माता के निधन के बाद से उन्होंने प्रण कर लिया था कि देश मे डायलिसिस करा रहे रोगियों का उपचार होम्योपैथिक से करेंगे। होटल बग्गा पैलेस में आयोजित पत्रकार वार्ता में डा. दिनेश मोहन ने बताया कि 12 वर्ष के गहन अध्ययन के बाद उन्होंने होम्योपैथिक पद्धति से अब तक कई गुर्दे के रोगियों का इलाज करने में सफलता पाई है। पत्रकार वार्ता में यमुनानगर से आए 65 वर्षीय सुरेंद्र सिंह ने बताया कि वह पिछले 10 वर्ष से मधुमेह रोग से पीड़ित था। मधुमेह रोग के कारण उनके गुर्दे बुरी तरह से प्रभावित हो गए थे, जिसके लिए डाक्टरों ने उन्हें गुर्दे बदलवाने की सलाह दी थी। गुर्दे बदलवाना मेरे लिए सम्भव नहीं था। मेरे को किसी ने डा. दिनेश मोहन के बारे में बताया तो मैंने इनसे चार महीने पूर्व सम्पर्क किया तो डा. ने मुझे विश्वास व भरोसा दिया कि होम्योपैथिक इलाज से गुर्दो का इलाज है, आप घबराए नहीं दवाई खाए जो आपके गुर्दे ठीक काम करने शुरू कर देंगे। गुर्दे रोग से पीड़ित मंडी गीदडवहा निवासी रेणु गर्ग ने बताया कि वह पिछले एक वर्ष से डायलिसिस पर थी, जब उन्हें डा. दिनेश मोहन का पता चला तो मैंने इनका इलाज शुरू कर दिया अब मैं पिछले तीन महीने से ठीक हूं, डा. दिनेश मोहन ने मेरे को मौत के मुहं से बचा लिया है। डा. दिनेश मोहन का कहना है कि कीड़नी के रोगी में मनका स्वस्थ्य हो जाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्षों से उन्होंने कीड़नी के मरीजों के मन का सतर्कतापूर्ण निरीक्षण किया, ज्यादातर मरीजों में उनके मन को उदास, शोक संतप्त एवं दुःखी अवस्था में पाया। होम्योपैथिक बीमारियों के साइकोसोमैटिक (मनोवैहिक) कारणों को भलीभांति अध्ययन करती है। मन शरीर का सम्बंध शारीरिक लक्ष्णों का बीमार मन से पैदा होना मनुष्य के संघर्ष शील जीवन में ऐसे बहुत से कारण जन्म से विकास के वर्षों में प्रतिकूल परिस्थितियों आघात, मानसिक तनाव, सदमा, दहशत से मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है, इन हालात में मनुष्य के शरीर की मशीनरी के अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य सम्बंधी प्रणाली को अव्यवस्थित कर देते हैं।

उनका कहना था कि गुर्दे का रोग एक मल्टी सिस्टम गड़बड़ी है, जिसमें खून की कमी, रक्तचाप, दिल की गति बढ़ना, सांस का ठीक न आना, वजन गिरना आदि कई प्रकार की तकलीफें आ जाती है, जिन्हें होम्योपैथिक के उपचार से ठीक जाना पूरी तरह सम्भव है। डा. दिनेश मोहन का कहना है कि होम्योपैथिक पद्धति से हजारों हृदय रोगियों का सफल इलाज कर चुके हैं, जिनको डाक्टरों ने दिल का ओपरेशन कराने को कहा था। डा. दिनेश मोहन ने अपनी इस सफलता का श्रेय अपने पिता जो स्वयं होम्योपैथि डा. है सुरेंद्र मोहन को दिया।

Chandigarh

al Area, Sector 6, Panchkula 134 109 (Haryana) India, E-MAIL: cnl@expressindia.com Phone: 5024400, 5024444 Fax Editorial: 5024422, Fax Sched

The Indian EXPRESS
Newsline

uling: 5024426 Vol XIV No. 296 | CHANDIGARH | SATURDAY | SEPTEMBER 22, 2007

In BRIEF

## Doctors claim foolproof treatment for renal failure

AMBALA: Homoeopath Dr Surinder Mohan, Dr Dinesh Mohan and Dr Saroj Mohan have claimed successful treatment of kidney failure. The doctor-trio, at a press conference here today, stated that 'through careful observation, we have investigated the mental aspect of kidney patients. The mind, in most cases, is terribly depressed, in constant agitation, witnesses sleepless nights and is prone to violent disturbances that find vent through anger.' They claimed that Homoeopathy takes into account the psychosomatic make-up of the patient, that is, mind-body relationship having symptoms of mental origin. They further claimed that during the treatment of a number of patients suffering from renal failure, they found that holistic approach of healing played a vital role because 'mind' was almighty- a source of infinite healing energy. In their view, if this healing centre was powerfully stimulated by the right healing Homeo dynamite, then curative a vital reaction started which healed the mind and commanded the kidney cells to regenerate, thereby restoring healthy function. A number of patients who recovered from the disease, two of them Pushpa Vati and Renu Garg from Punjab, said that they had been on dialysis and were told to go for kidney transplant. But the miracle treatment from the Mohans saved their lives and they are now in perfect form after continued treatment for months.

Chandigarh Tribune

Chandigarh Sunday September 23 2007

## Kidney failure seminar

AMBALA: Treatment of kidney failure with out dialysis and kidney transplantation is possible in homoeopathy, claimed homoeopathy practitioner Surender Mohan here on Saturday. While speaking in a seminar on the topic of kidney failure he said homoeopathy possessed great power to save lives of patients suffering from kidney failure. He said it was as fast as an intensive care unit and was a less expensive treatment. Several other speakers including Saroj and Dinesh Mohan also addressed the seminar. — OC

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

पानीपत, शनिवार,
22 सितंबर, 2007

# दावा : होम्योपैथ में है किडनी फेल का इलाज

अंबाला, जागरण संवाद केंद्र : होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के माध्यम से किडनी के मरीजों को स्वस्थ बनाया जा सकता है। यही नहीं होम्योपैथी की दवाइयों में इतनी ताकत है कि यह इमरजेंसी के समान अपना असर दिखाती हैं। इस बात का दावा होम्यो चिकित्सक डा. सुरेंद्र मोहन, डा. सरोज मोहन, डा. दिनेश मोहन ने पत्रकारवार्ता के दौरान किया।

उन्होंने कहा कि लोगों में धारणा है कि होम्योपैथी में इलाज काफी लंबा चलता है और मरीज को काफी परहेज भी करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं है कि इलाज लंबा चलता है, कुछ बीमारियों में इलाज का समय लंबा हो सकता है, लेकिन इसमें सटीक इलाज होता है। उन्होंने कहा कि किडनी फेल होने की स्थिति में होम्यो दवाएं कारगार हैं। उन्होंने कहा कि किडनी फेल होने पर शरीर में कई प्रकार की गड़बड़ियां आ जाती हैं, जिसके कारण मरीज को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। दवाओं के साथ-साथ मनुष्य को अपनी मानसिक स्थिति भी सकारात्मक रखनी चाहिए, जिससे इलाज में और आसानी होती है। किडनी फेल होने का मरीज यदि समय पर अपना इलाज होम्योपैथी में शुरू कर दे, तो काफी हद तक उसे ठीक किया जा सकता है और वह सामान्य जीवन जी सकता है।

अमर उजाला

# बगैर डायलिसिस और प्रत्यारोपण के गुर्दे के इलाज का दावा

अंबाला। शहर स्थित मोहन होम्यो क्लीनिक के डाक्टर दिनेश मोहन का दावा है कि वे होम्योपैथी के जरिए डायलिसिस पर चले रहे मरीजों का भी सफल इलाज कर सकते हैं। उनका दावा है कि इलाज के बाद उन्हें न तो डायलिसिस कराने की जरूरत है और न ही गुर्दे बदलवाने की आवश्यकता रहेगी। शुक्रवार को छावनी स्थित एक होटल में संवाददाताओं से बातचीत के दौरान डाक्टर दिनेश मोहन ने कहा कि होम्योपैथी के माध्यम से वे डायलिसिस का भी सफल इलाज कर सकते हैं। उन्होंने अपने उन मरीजों से भी परिचय कराया, जिन्हें बड़े बड़े अस्पतालों द्वारा गुर्दे बदलने की सलाह दी गई थी। उन्होंने दावा किया कि उनके इलाज के बाद मरीजों को डायलिसिस की आवश्यकता नहीं होगी और न ही गुर्दे बदलवाने की। उन्होंने कहा कि उनका इलाज भी डायलिसिस से बेहद सस्ता है। उन्होंने कहा कि इलाज होलिस्टिक होना जरूरी है। शरीर मन और जीवनी शक्ति को एक साथ समझकर इलाज करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि मनुष्य का मन अनंत शक्ति का केंद्र है।

हरिभूमि

रोहतक, शनिवार 22 सितंबर, 2007

# होम्यो इलाज से बच सकते हैं रोगी

▸ अंबाला के होम्योपैथ डॉ. दिनेश मोहन का दावा

▸▸ हरिभूमि न्यूज (अंबाला)। अंबाला शहर स्थित मोहन होम्यो क्लीनिक्स के डॉ. दिनेश मोहन दावा करते हैं कि किडनी फेल के रोगियों को मंहगी ट्रांसप्लांट सर्जरी से बचा कर उन्हें होम्यो उपचार के सहारे उबारा जा सकता है। शुक्रवार को डॉ. दिनेश मोहन ने अपने ऐसे कई रोगियों को मीडिया के सामने पेश किया, जो किडनी फेल की शिकायत के बाद डॉयलेसिस लेते रहे थे। इन रोगियों ने कहा कि डॉयलेसिस बंद कर होम्यो उपचार लेने के बाद वह अपने को पहले से बेहतर महसूस कर रहे हैं। डॉ. दिनेश मोहन ने कहा कि स्वस्थ मन शरीर के कई गंभीर विकारों का अंत कर सकता है। उन्होंने कहा कि होम्योपैथी बीमारियों के मनोदैहिक कारणों का भलीभांति अध्ययन करती है। संघर्षशील जीवन में कई कारणों से शरीर की प्रणाली अव्यवस्थित हो जाती है। गुर्दे का रोग मल्टीसिस्टम की गड़बड़ी है। इस गड़बड़ी को ठीक किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि उपचार का होलिस्टिक होना आवश्यक है। इस अवसर पर मोहन होम्यो क्लीनिक के मुख्य संचालक डॉ. सुरेंद्र मोहन व डॉ. सरोज मोहन भी मौजूद थे।

ਪੰਜਾਬੀ ਟ੍ਰਿਬਿਊਨ
ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ, ਸ਼ਨਿਚਰਵਾਰ, 22 ਸਤੰਬਰ 2007

# ਹੋਮਿਓਪੈਥੀ ਰਾਹੀਂ ਗੁਰਦੇ ਦੇ ਇਲਾਜ ਦਾ ਦਾਅਵਾ

ਨਿਜੀ ਪੱਤਰ ਪ੍ਰੇਰਕ

ਅੰਬਾਲਾ, 21 ਸਤੰਬਰ

ਹੋਮਿਓਪੈਥੀ ਰਾਹੀਂ ਇਲਾਜ ਨਾਲ ਕਿਡਨੀ ਟਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਤੋਂ ਬਚਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਇਹ ਦਾਅਵਾ ਇਥੋਂ ਦੇ ਡਾ. ਦਿਨੇਸ਼ ਮੋਹਨ ਨੇ ਅੱਜ ਪ੍ਰੈਸ ਕਾਨਫਰੰਸ ਦੌਰਾਨ ਕੀਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਹ 7 ਸਾਲ ਦੀ ਖੋਜ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹੋਮਿਓਪੈਥੀ ਰਾਹੀਂ 'ਕਿਡਨੀ ਫੇਲ੍ਹ' ਦਾ ਸਫਲ ਇਲਾਜ ਕਰ ਕੇ 11 ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਨੂੰ ਜੀਵਨ ਦਾਨ ਦੇ ਚੁੱਕੇ ਹਨ। ਡਾ. ਮੋਹਨ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਹੋਮਿਓਪੈਥੀ ਸਰੀਰ, ਮਨ ਅਤੇ ਜੀਵਨ ਸ਼ਕਤੀ ਤਿੰਨਾਂ ਦਾ ਇਲਾਜ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਗੁਰਦੇ ਦੀ ਬਿਮਾਰੀ ਤੋਂ ਪੀੜਤ ਵਿਅਕਤੀ ਲਈ ਹਰ ਹਫਤੇ ਡਾਇਲੈਸਿਸ ਕਰਵਾਉਣਾ ਬਹੁਤ ਮਹਿੰਗਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਗੁਰਦਾ ਬਦਲਣਾ ਹੋਰ ਵੀ ਮਹਿੰਗਾ ਅਤੇ ਮੁਸ਼ਕਲ ਕੰਮ ਹੈ। ਜਦੋਂਕਿ ਹੋਮਿਓਪੈਥੀ ਨਾਲ ਇਲਾਜ ਸਸਤਾ ਤੇ ਸੌਖਾ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

भास्कर

HEALTH CARE IN NEW MILLENNIUM
AN EXPOSITION OF MEDICAL FACILITIES
ORG. BY: INDIAN MEDICAL ASSOCIATION, CHD.
SEP. 16 & 17, 2000

**चंडीगढ़, पंचकूला, मोहाली**

# होम्योपैथी से टली उनकी हार्ट सर्जरी

**रवि शर्मा**

**चंडीगढ़, 4 अक्टूबर।** मैरी पीटर को दिल के खराब वॉल्व बदलवा लेने की सलाह देने वाले पीजीआई के डॉक्टरों को भी हैरत है कि होम्योपैथी की छोटी-छोटी गोलियों ने मैरी को ओपन हार्ट सर्जरी से बचा लिया। होम्योपैथी को सर्दी-जुकाम की दवा मानने वालों के लिए तो यह चमत्कार से कम नहीं।

मैरी पीटर के लिए तो होम्योपैथी जादू ही है जिसके इलाज से वे बिना किसी चीरफाड़ के पूरी तरह ठीक हो गई हैं। पीजीआई के कार्डियोलॉजी विभाग की जांच-पड़ताल के बाद जब मैरी के कार्ड पर 'आरएचए', 'एमएमआर', और 'एमएआर' जैसे 'हाइली टैक्निकल' शब्द लिखे तभी उन्हें अंदेशा हो गया था कि मर्ज बहुत बड़ा है जिसके लिए काफी पैसा और बड़ी सर्जरी करने की जरूरत होगी। रह्यमेटिक हार्ट डीसीज और मिट्रल रिगर्जीटिशनै दिल की उस खतरनाक बीमारी का नाम है जिससे दिल में खून का दौरा बनाए रखने का काम करने वाले वॉल्व खराब हो जाते हैं। वॉल्व में लीकेज होने से खून वापस लौटने लगता है। सांस फूलने, पिंडलियों में दर्द और ऐंठन, गुस्सा, तनाव और अनियमित मासिक धर्म जैसे लक्षणों जैसी 'केस हिस्ट्री' लेकर पीजीआई आई मैरी की कार्डियोलॉजी विभाग की ईको रिपोर्ट में मैरी के दिल के मिट्रल और ट्राइक्सपाइड वॉल्वों में 'रिगर्जीटिशन' और 'स्टेनोसिस' पाया गया और इसका इलाज ओपन हार्ट सर्जरी के जरिए वॉल्व बदलना बताया गया।

होम्योपैथिक दवाओं को वैसे 'न नफा, न नुकसान' की श्रेणी में रखा जाता रहा है। आमतौर पर सिरदर्द होते ही एनासिन की गोली गटकने वालों के लिए तो होम्योपैथिक दवाएं सर्दी-जुकाम ठीक करने वाली 'मीठी गोलियां' ही होती हैं, लेकिन मिट्रल रिगर्जीटिशन और स्टेनोसिस जैसी खतरनाक बीमारी को ठीक करने की क्षमता के बाद मैरी की राय भी बदली। उन्हें सर्जरी से बचने के एवज में दो साल दवा जरूर खानी पड़ी, लेकिन वे अब पूरी तरह स्वस्थ हैं। उन्हें ओपन हार्ट सर्जरी की सलाह देने वाले डॉक्टर भी हैरान हैं। मैरी के इस इलाज से होम्योपैथी को महंगे और बड़े उपकरणों की मदद से इलाज करने वाली सर्जरी के मुकाबले में खड़ा करने वाले डॉक्टर दिनेश मोहन इसे खुद के लिए तो एक उपलब्धि मानते हैं, लेकिन होम्योपैथी के लिए नहीं। उनके शब्दों में 'इस पद्धति में इससे भी बड़े चमत्कार करने की ताकत है। जरूरत है तो बस इसे गहराई तक समझने और इस पर विश्वास करने की।'

पिछले दिनों इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की ओर से आयोजित हैल्थ मिलेनियम के दौरान डॉक्टर दिनेश मोहन की इस उपलब्धि के बारे में जानने के लिए कई सीनियर एलोपैथ भी आए थे। होम्योपैथिक चिकित्सा के जरिए दिल की ऐसी बीमारी ठीक कर देने के बारे में वहां मौजूद दिल्ली से आए एक सीनियर डॉक्टर ने कहा था कि होम्योपैथी में दिल की आपातकालीन स्थितियों से निबटने की क्षमता है बशर्ते मरीज को भी इस दवा पद्धति पर यकीन हो और ऐसा भी नहीं है कि मैरी पीटर का एक अकेला केस है जो डॉक्टर दिनेश मोहन ने बिना ऑपरेशन ठीक किया हो। उनका दावा है कि अंबाला जिला के बराड़ा की 40 वर्षीया कमलेश को रेलवे अस्पताल के डॉक्टरों ने 'पेस मेकर' लगवाने की सलाह दे दी थी। ईसीजी के बाद उनका 'डायग्नोसिस' 'कम्पलीट हार्ट ब्लॉक विद कम्पलीट ए-वी डिसएसोसिएशन' के तौर पर किया गया था। उनकी नब्ज 70से 80 के सामान्य औसत के बजाय सिर्फ 40 थी। उन्हें दिल में पेस मेकर लगवाने की सलाह देकर दिल्ली रैफर कर दिया गया था। डॉक्टर दिनेश मोहन के मुताबिक किसी की सलाह पर कमलेश उनके पास आई और उनसे इलाज करवाना शुरू किया।

बीते महीने के आखिरी सप्ताह में की गई ईसीजी की रिपोर्ट के मुताबिक उनकी पल्स रेट 83 है। पेस मेकर लगवाने की जहमत से बचने के लिए कमलेश को आठ महीने तक दवाएं जरूर खानी पड़ीं, लेकिन अब उन्हें इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। होम्योपैथिक दवाओं के प्रभाव के बारे में पीजीआई के डॉक्टर मानते तो हैं, लेकिन खुले तौर पर स्वीकार करने से कतराते हैं।